चाचा नेहरू की सीख

फारूक आफरीदी

शरद ऋतु का सुहावना दिन था। स्कूल में बच्चों की चहक, हँसी और रंग बिरंगे गुब्बारों और फूलों की क्यारियों से पूरा मैदान महक रहा था। आज 14 नवंबर का ऐतिहासिक दिन था— बाल दिवस। हर बच्चे के चेहरे पर मुस्कान थी, आज सिर्फ पढ़ाई नहीं, खेलकूद, गीत और नाटक का दिन था। प्रधानाध्यापक जी ने माइक पर घोषणा की—बच्चो! आज हम सब अपने प्यारे चाचा नेहरू को याद करते हैं, जिन्होंने हमेशा कहा कि बच्चे देश का भविष्य हैं।

सब बच्चे ताली बजाने लगे। तभी मनीष नाम का एक लड़का धीरे से बोला—भविष्य तो ठीक है, पर अभी तो मैं क्लास का पिछलग्गू हूँ, भविष्य बनेगा कहाँ से?बगल में बैठी राधा हँस पड़ी—चाचा नेहरू होते तो तुम्हें ज़रूर कोई सीख देते।

दोपहर को स्कूल में बाल मेला शुरू हुआ। बच्चों ने अपनी-अपनी स्टॉल लगाई। कोई समोसे बेच रहा था, कोई किताबें, कोई खेल-खिलौने। मनीष को जिम्मेदारी मिली थी 'स्वच्छता और अनुशासन स्टॉल' की, मगर उसका मन नहीं लगा।

उसने बड़बड़ाते हुए कहा—आजकल कौन सफाई की बातों में ध्यान देता है? गोलगप्पे वाले के यहाँ कितनी जबर्दस्त भीड़ उमड़ रही है। वह स्टॉल छोड़कर खेलने चला गया। कुछ देर बाद जब वापस लौटा तो देखा— उसका स्टॉल गंदगी से भरा है, पोस्टर गिर गए हैं और पानी की बोतलें उलटी पड़ी हैं। शिक्षक ने उसे देखा और कहा—मनीष, जिम्मेदारी निभाना सीखो। केवल बातें करने से कुछ नहीं होता।

मनीष को बहुत शर्मिंदगी हुई। वह पेड़ के नीचे बैठा सोचने लगा-काश! कोई मुझे सिखा देता कि असली मेहनत और जिम्मेदारी क्या होती है… ।

रात को मनीष थका-हारा सोया। तभी उसने देखा— एक उजली रोशनी फैली और उसमें से चाचा नेहरू मुस्कुराते हुए सामने आए। उनके जैकेट पर गुलाब लगा था, सफेद कुरता-पायजामा और नेहरू जैकेट में वे वैसे ही प्यारे लग रहे थे जैसे किताबों में दिखते हैं।

मनीष ने आश्चर्य से पूछा—आप… आप चाचा नेहरू हैं? वे मुस्कुराए—हाँ बेटा, लेकिन मुझे सिर्फ तस्वीरों में मत देखो, मेरे विचारों को जानो और समझो। मनीष बोला—मुझे सिखाइए चाचा, कैसे अच्छा बच्चा बन सकता हूँ?

नेहरू जी ने पास बैठकर कहा—देखो बेटा, देश की ताकत सिर्फ बड़ी इमारतों में नहीं, बच्चों के दिलों में छिपी है।अगर तुम मेहनती, ईमानदार और दयालु बनोगे, तो यही देश की सबसे बड़ी सेवा होगी।मनीष ध्यान से सुनता रहा।

नेहरू जी ने आगे कहा—तीन बातें हमेशा याद रखना —पहली बात है स्वच्छता और अनुशासन — अगर तुम अपने आस-पास साफ-सफाई रखो, तो तुम्हारा मन भी साफ रहेगा।दूसरी बात है मेहनत और लगन — बिना मेहनत के कोई सपना

पूरा नहीं होता।तीसरी और महत्वपूर्ण बात है प्रेम और सद्भाव — दूसरों की मदद करना ही असली मानवता है।

फिर उन्होंने मुस्कुराते हुए जोड़ा—और यह भी याद रखो कि सबसे सुंदर फूल वो नहीं जो बगीचे में खिलता है, बल्कि वो बच्चा है जो अपने व्यवहार से दूसरों का दिल जीत लेता है।

सुबह मनीष की आँख खुली तो वह मुस्कुरा रहा था। उसे लगा जैसे चाचा नेहरू की बातें उसके कानों में गूंज रही हो।स्कूल पहुँचते ही उसने सबसे पहले अपने स्टॉल की सफाई की, पोस्टर ठीक किए और एक नया बोर्ड लगाया —स्वच्छता ही देशभक्ति है।

अब वह हर आने वाले बच्चे को समझा रहा था—अगर हम अपना घर, स्कूल और मन साफ रखें, तो देश अपने आप सुंदर बन जाएगा।उसका उत्साह देखकर प्रधानाध्यापक जी भी आए। बोले —वाह मनीष! आज तो तुम सच्चे चाचा नेहरू के शिष्य लग रहे हो।मनीष ने मुस्करा कर कहा —जी सर, अब मुझे समझ में आ गया है कि असली खुशी दूसरों को खुश देखकर मिलती है।जब बाल दिवस का कार्यक्रम समाप्त हुआ, तो मनीष को "स्वच्छता प्रहरी" का सम्मान दिया गया।